B.Ed - 2nd Year **Dr. Amod Kumar Sinha**
Session – 2018-2020 (Assistant Professor)
Subject - School Management and Leadership Department of Education
Course - 11 (e), Unit - (C) A. N. D. College
Topic - **राष्ट्रीय शिक्षा आयोग** Shahpur Patory
(National Education Commission) Samstipur
Lecture No. – 16

राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1964–66) ने भी लगभग इसी प्रकार की संस्तुतियाँ की हैं। आयोग की मान्यता है कि सामान्य शिक्षा के साथ–साथ सामाजिक एवं राष्ट्रीय समस्याओं की वास्तविक समझ विकसित करने तथा सांस्कृतिक धरोहर को आत्मसात् करने हेतु विद्यालयों को स्थानीय समुदाय के सम्पर्क में लाना आवश्यक है। इससे छात्रों में दायित्व भावना, सहकार की भावना तथा समाज–सेवा की ईच्छा विकसित की जा सकती है। एक प्रशिक्षित तथा उत्साही शिक्षक, जो स्थानीय समुदाय से निकट सम्पर्क रखता है, आसानी से उन स्थितियों को खोज सकता है जो सामान्य ग्राम विकास से सम्बंधित है। विद्यालय और समुदाय के निकटता का यह आन्दोलन बहुत पुराना है। आज अधिकांश शिक्षाविद् विद्यालय तथा समुदाय के अन्योन्याश्रित सम्बंध को स्वीकार करते हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो इन कार्यक्रमों को एक प्रकार का पागलपन मानते हैं तथा छात्रों और शिक्षकों के समय की बर्बादी ही मानते हैं। ये वे लोग है जो राजकीय नियम सेवाशर्त्तों तथा बोर्ड द्वारा निर्देशित पाठ्यक्रम तक ही विद्यालयों के कार्यक्रमों को सीमित रखना चाहते हैं, परन्तु इक्कीसवीं सदी की भविष्यवाणी करने वालों के अनुसार यह एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है। इक्कीसवीं सदी के बारे में किये गये प्रारंभिक चिन्तन में मात्र समुदाय में प्रौढ़ों के लिए सतत् शिक्षा का कार्यक्रम तथा युवाओं के लिए मनोरंजनात्मक कार्य करना ही विद्यालय समुदाय कार्यक्रमों में आते थे। परन्तु अब यह समग्र विद्यालय प्रणाली की दर्शन को प्रभावित करती है जिसके अन्तर्गत विद्यालय की वृहत्तर भूमिका की परिकल्पना की जाती है। सामुदायिक विद्यालय की भूमिका में निम्नलिखित कार्यों को सम्पन्न करते हैं–

1. समुदाय के लिए संसाधनों का अधिकाधिक प्रयोग के अवसर प्रदान करना।

2. पाठ्यक्रम का समुदाय की आवश्यकताओं के अनुरूप निमार्ण करना।

3. समग्र समुदाय की शैक्षिक आवश्यकताओं की सम्पूर्त्ति करना जिसमें निदानात्मक, उपचारात्मक तथा अनुरंजनात्मक कार्यक्रम सम्मिलित है। इनमें प्रौढ़ों के लिए शैक्षिक सुविधाएँ–प्राथमिक, माध्यमिक, व्यवसायिक तथा अनवरत् शिक्षण कार्यक्रम व सामाजिक एवं जनसेवा भी सम्मिलित है।

4. सामुदायिक एवं राजकीय संसाधनों का प्रभावी उपयोग।

5. सामुदायिक शिक्षण प्रक्रिया का विकास जिसमें सामुदायिक परिषद् का गठन सम्मिलित है। आदर्श सामुदायिक जीवन की तैयारी तथा वास्तविक जीवन की शिक्षा के लिए यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। व्यावहारिक जीवन की शिक्षा तभी ठीक होगी जब वह जीवन की व्यावहारिक समस्याओं का समाधान शिक्षा के कार्यक्रमों में अवश्य होना चाहिए।

यदि जनतंत्रीय मूल्यों की शिक्षा देनी है तो व्यक्तिगत सम्मान, परस्पर सहयोग तथा समानता के अवसर जुटाने आवश्यक होंगे। हमारी शिक्षा में मात्र आत्माभिव्यक्ति के लिए छात्रों को तैयार किया जाता है, तथ्यों का ज्ञान देना मात्र शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य रह गया है, परन्तु आने वाली समस्याओं को कैसे सुलझाएँ इसके बहुत कम अवसर छात्रों को प्रदान किए जाते हैं। आज शिक्षाविद् मानते हैं कि विद्यालय तथा समुदाय अलग–अलग होकर कार्य नहीं कर सकते हैं।

(समाप्त)